

परिकल्पना का अर्थ एवं एक सुदृढ़ परिकल्पना की विशेषताएँ

1. प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक कार्य अनुसंधान में परिकल्पना का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी अनुसंधान को व्यवस्थित और वैज्ञानिक बनाने के लिए शोधकर्ता को अध्ययन की समस्या के संबंध में कुछ संभावित निष्कर्षों की कल्पना करनी पड़ती है। इन्हीं संभावित निष्कर्षों को परिकल्पना कहा जाता है। परिकल्पना अनुसंधान को सही दिशा प्रदान करती है तथा तथ्यों के संग्रह, विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने में सहायता करती है।

2. परिकल्पना का अर्थ

परिकल्पना दो शब्दों से मिलकर बनी है—‘परि’ और ‘कल्पना’। इसका सामान्य अर्थ किसी घटना, समस्या या परिस्थिति के संबंध में पहले से लगाया गया संभावित अनुमान है।

अनुसंधान में परिकल्पना किसी समस्या के संबंध में प्रस्तुत किया गया ऐसा संभावित कथन है, जिसकी सत्यता की जाँच वैज्ञानिक विधियों द्वारा की जा सकती है।

उदाहरण: यदि कोई शोधकर्ता यह अध्ययन करना चाहता है कि शिक्षा का स्तर बढ़ने से महिलाओं में जागरूकता बढ़ती है या नहीं, तो वह परिकल्पना प्रस्तुत कर सकता है कि “महिलाओं के शिक्षा स्तर और उनकी सामाजिक जागरूकता के बीच सकारात्मक संबंध है।”

इस कथन की जाँच तथ्यों एवं अनुसंधान के माध्यम से की जा सकती है।

3. परिकल्पना की परिभाषाएँ

परिकल्पना को निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है—

1. सामान्य अर्थ में: परिकल्पना किसी अनुसंधान समस्या के संबंध में प्रस्तुत किया गया संभावित उत्तर या अनुमान है, जिसकी सत्यता की जाँच की जा सकती है।

2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण से: परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबंध को व्यक्त करने वाला ऐसा कथन है, जिसका अनुभवजन्य तथ्यों के आधार पर परीक्षण किया जा सकता है।

3. सामाजिक कार्य अनुसंधान के संदर्भ में: परिकल्पना सामाजिक समस्या, व्यवहार या सामाजिक घटनाओं के बीच संभावित संबंध के संबंध में दिया गया एक अस्थायी कथन है, जिसकी जाँच अनुसंधान द्वारा की जाती है।

4. एक सुदृढ़ परिकल्पना का अर्थ

एक सुदृढ़ परिकल्पना वह होती है जो स्पष्ट, तार्किक, वैज्ञानिक तथा परीक्षण योग्य हो। इसमें अध्ययन की समस्या और संबंधित चरों के बीच संभावित संबंध को इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि शोधकर्ता उपलब्ध तथ्यों के आधार पर उसकी जाँच कर सके।

एक अच्छी परिकल्पना न तो अस्पष्ट होती है और न ही केवल व्यक्तिगत विचारों पर आधारित होती है। उसका निर्माण संबंधित विषय के पूर्व ज्ञान, सिद्धांतों, पूर्व अध्ययनों तथा प्रारंभिक अवलोकनों के आधार पर किया जाता है।

उदाहरण: “स्वयं सहायता समूहों में नियमित भागीदारी करने वाली महिलाओं में वित्तीय जागरूकता का स्तर अधिक होता है।”

यह एक परीक्षण योग्य परिकल्पना है, क्योंकि महिलाओं की समूह में भागीदारी और वित्तीय जागरूकता के स्तर का अध्ययन किया जा सकता है।

5. एक सुदृढ़ परिकल्पना की विशेषताएँ

एक सुदृढ़ परिकल्पना में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए—

1. स्पष्टता

एक अच्छी परिकल्पना की भाषा सरल, स्पष्ट और अर्थपूर्ण होनी चाहिए। उसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए जिनके अनेक अर्थ निकलते हों।

उदाहरण: महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के बीच संबंध है।

2. परीक्षण योग्य होना

परिकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसकी सत्यता या असत्यता की जाँच उपलब्ध तथ्यों, आँकड़ों और वैज्ञानिक विधियों से की जा सके।

उदाहरण: शिक्षा का स्तर महिलाओं की सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता से संबंधित है।

इस कथन की जाँच सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार द्वारा की जा सकती है।

3. चरों के बीच संबंध

एक सुदृढ़ परिकल्पना में सामान्यतः दो या दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबंध स्पष्ट होना चाहिए।

उदाहरण: शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ती है।

यहाँ शिक्षा का स्तर और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता दो प्रमुख चर हैं।

4. तार्किकता

परिकल्पना का निर्माण तार्किक विचारों और उपलब्ध ज्ञान के आधार पर होना चाहिए। इसमें ऐसे अनुमान नहीं होने चाहिए जो बिना किसी उचित आधार के प्रस्तुत किए गए हों।

5. अनुभवजन्य आधार

एक अच्छी परिकल्पना का संबंध वास्तविक जीवन की घटनाओं और अनुभवों से होना चाहिए। इसकी जाँच अवलोकन, सर्वेक्षण, साक्षात्कार तथा अन्य अनुसंधान विधियों से की जा सके।

6. सीमित एवं विशिष्ट होना

परिकल्पना बहुत व्यापक न होकर अध्ययन की समस्या, क्षेत्र और संबंधित समूह के अनुसार सीमित होनी चाहिए।

उदाहरण: “बस्तर जिले की ग्रामीण महिलाओं में सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता का स्तर उनकी शैक्षिक स्थिति से संबंधित है।”

यह कथन अध्ययन के क्षेत्र और विषय को स्पष्ट करता है।

7. सरलता

एक सुदृढ़ परिकल्पना सरल और सहज होनी चाहिए। उसमें अनावश्यक जटिलताओं तथा अत्यधिक चरों को शामिल करने से बचना चाहिए।

सरल परिकल्पना की जाँच करना और उसके निष्कर्षों को समझना अपेक्षाकृत आसान होता है।

8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण

परिकल्पना का निर्माण वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए। इसमें अंधविश्वास, पूर्वाग्रह, व्यक्तिगत पसंद-नापसंद तथा बिना प्रमाण के धारणाओं को आधार नहीं बनाना चाहिए।

9. उपलब्ध तथ्यों के अनुकूल होना

परिकल्पना बनाते समय विषय से संबंधित पूर्व अध्ययनों, सिद्धांतों और उपलब्ध तथ्यों पर विचार करना चाहिए। हालाँकि, परिकल्पना का उद्देश्य केवल पुराने निष्कर्षों को दोहराना नहीं, बल्कि उनकी जाँच करना या नए संबंधों का अध्ययन करना भी हो सकता है।

10. वस्तुनिष्ठता

एक अच्छी परिकल्पना व्यक्तिगत भावनाओं और पूर्वाग्रहों से मुक्त होनी चाहिए। उसका परीक्षण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि शोधकर्ता की व्यक्तिगत मान्यताएँ परिणामों को प्रभावित न करें।

11. सीमित समय एवं संसाधनों में परीक्षण की संभावना

परिकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसकी जाँच उपलब्ध समय, धन, साधनों और शोधकर्ता की क्षमता के अनुसार संभव हो।

इससे अनुसंधान कार्य को व्यवस्थित रूप से पूरा करने में सहायता मिलती है।

12. खंडन की संभावना

एक वैज्ञानिक परिकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसके गलत सिद्ध होने की संभावना भी हो। यदि कोई कथन किसी भी प्रकार के प्रमाण से गलत सिद्ध नहीं किया जा सकता, तो उसे वैज्ञानिक परिकल्पना के रूप में जाँचना कठिन होता है।

उदाहरण के लिए, “शिक्षा और रोजगार के बीच कोई संबंध नहीं है” जैसे कथन की भी उपयुक्त आँकड़ों की सहायता से जाँच की जा सकती है।

13. सिद्धांतों से संबंध

एक अच्छी परिकल्पना का संबंध संबंधित विषय के स्थापित सिद्धांतों या पूर्व अनुसंधान से हो सकता है। इससे शोधकर्ता को समस्या को समझने और परिणामों की व्याख्या करने में सहायता मिलती है।

14. अनुसंधान को दिशा प्रदान करना

सुदृढ़ परिकल्पना शोधकर्ता को यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि कौन-से तथ्य एकत्रित करने हैं, किन चरों का अध्ययन करना है और प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किस प्रकार करना है।

6. सामाजिक कार्य अनुसंधान में सुदृढ़ परिकल्पना का महत्व

सामाजिक कार्य अनुसंधान में सुदृढ़ परिकल्पना का विशेष महत्त्व है। इसके प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं—

1. अनुसंधान को दिशा देना: यह अध्ययन के उद्देश्य और प्रक्रिया को स्पष्ट करती है।
2. तथ्य संग्रह में सहायता: यह निर्धारित करने में मदद करती है कि कौन-सी जानकारी आवश्यक है।
3. समय एवं संसाधनों की बचत: यह अनावश्यक तथ्यों के संग्रह को कम करने में सहायता करती है।
4. चरों के संबंधों का अध्ययन: यह सामाजिक घटनाओं के बीच संभावित संबंधों की जाँच करने में सहायक है।
5. आँकड़ों के विश्लेषण में सहायता: यह शोधकर्ता को प्राप्त तथ्यों का व्यवस्थित विश्लेषण करने की दिशा देती है।
6. निष्कर्ष निकालने में सहायता: परिकल्पना के परीक्षण से शोधकर्ता यह निर्धारित कर सकता है कि उपलब्ध प्रमाण उसके समर्थन में हैं या उसके विरुद्ध।
7. सामाजिक समस्याओं के समाधान में योगदान: यह गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, महिला सशक्तीकरण तथा बाल कल्याण जैसी समस्याओं के अध्ययन में उपयोगी होती है।

7. उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण

मान लीजिए कि एक शोधकर्ता छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना चाहता है।

अनुसंधान समस्या: ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता के बीच क्या संबंध है?

परिकल्पना: ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता के बीच सकारात्मक संबंध है।

स्वतंत्र चर: शैक्षिक स्थिति।

आश्रित चर: सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता।

परीक्षण की विधि: प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण।

इस प्रकार, परिकल्पना शोधकर्ता को अध्ययन के चरों की पहचान करने और उनके बीच संबंध की जाँच करने में सहायता करती है।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि परिकल्पना के समर्थन या विरोध में प्राप्त प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। केवल परिकल्पना प्रस्तुत कर देने से वह सत्य सिद्ध नहीं हो जाती।

8. निष्कर्ष

अंततः कहा जा सकता है कि परिकल्पना वैज्ञानिक अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण आधार है। यह अनुसंधान समस्या के संभावित उत्तर को प्रस्तुत करती है तथा शोधकर्ता को तथ्यों के संग्रह, विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने में दिशा प्रदान करती है। एक सुदृढ़ परिकल्पना स्पष्ट, सरल, तार्किक, परीक्षण योग्य, वस्तुनिष्ठ और अनुभवजन्य आधार वाली होती है। सामाजिक कार्य अनुसंधान में ऐसी परिकल्पना सामाजिक समस्याओं को वैज्ञानिक ढंग से समझने तथा उनके समाधान के लिए उपयोगी ज्ञान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

9. संदर्भ ग्रंथ

1. Kothari, C. R. (2004). Research Methodology: Methods and Techniques.
2. Kerlinger, Fred N. (1986). Foundations of Behavioral Research.
3. Kumar, Ranjit (2011). Research Methodology: A Step-by-Step Guide for Beginners.